IJISEM
INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIONS IN SCIENCE ENGINEERING AND MANAGEMENT

International Journal of Innovations In Science Engineering And Management

Check for updates

OPEN ACCESS

Volume: 5

Issue: 1

Month: March

Year: 2026

ISSN: 2583-7117

Published: 07.03.2026

Citation:

डॉ. रंजीत कुमार, पवन कुमार "बुन्देलखण्ड के प्रमुख पर्यटन स्थल एवं पर्यटन क्षेत्र में संभावनाएं " International Journal of Innovations in Science Engineering and Management, vol. 5, no. 1, 2026, pp. 174-178

DOI:

10.69968/ijisem.2026v5i1174-178

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Share Alike 4.0 International License

बुन्देलखण्ड के प्रमुख पर्यटन स्थल एवं पर्यटन क्षेत्र में संभावनाएं

डॉ. रंजीत कुमार[1], पवन कुमार[2]

[1] (नेट/जे.आर.एफ.), डिपार्टमेंट ऑफ टूरिज्म एण्ड होटल मैनेजमेंट, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी, (उ०प्र०).
[2] शोधार्थी, (नेट/जे.आर.एफ.), समाज कार्य विभाग, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी, (उ०प्र०).

सारांश

भौगोलिक दृष्टि से बुन्देलखण्ड क्षेत्र का विस्तार उत्तर प्रदेश के साथ ही मध्य प्रदेश में भी है। उत्तर प्रदेश के 7 और मध्य प्रदेश के 6 जिलों को आच्छादित करता बुन्देलखण्ड प्राचीन काल से ही अपनी गौरवपूर्ण ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और प्राकृतिक महत्त्व के कारण अपनी पहचान बनाये हुए है। खनिज संपदा की दृष्टि से यह क्षेत्र अत्यधिक समृद्ध है। बुंदेलों, चंदेलों और मराठाओं की अमर गाथाओं को, उनके द्वारा बनाये गये किले और मंदिर समूहों की प्राचीरें आज भी जीवंत करती हैं। विविध आयामों को स्वयं में समेटे हुए बुन्देलखण्ड में पर्यटन की असीम संभावनाएं हैं। ऐतिहासिक, धार्मिक और प्राकृतिक दृष्टि से अनेक दर्शनीय स्थल यहाँ विद्यमान हैं; जैसे- झाँसी का किला, ग्वालियर का किला, ओरछा का किला और रामराजा मंदिर, पन्ना टाइगर रिजर्व, रानीपुर टाइगर रिजर्व, खजुराहो के मंदिर समूह, चित्रकूट धाम, सोनागिरी, दतिया आदि हाल ही में माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा इस क्षेत्र में पर्यटन विकास पर बल दिया गया। इसके आलोक में उत्तर प्रदेश सरकार दवारा बुन्देलखण्ड को पर्यटन के क्षेत्र में ग्रोथ इंजन बनाने का प्रयास किया जा रहा है। बुन्देलखण्ड गौरव महोत्सव कार्यक्रम भी इसी का हिस्सा है, जिसे 23 जनवरी से 18 फरवरी के बीच उत्तर प्रदेश एक बुन्देलखण्ड क्षेत्र के कई जिलों में मनाया गया। इसके माध्यम से सैलानियों को राजाओं की वीरगाथाओं और प्रकृति के मनमोहक रूप से परिचित का प्रयास किया गया है। घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय सैलानियों को आकर्षित करने के लिए बुन्देलखण्ड के दर्शनीय स्थलों को बेहतर रेल और हवाई कनेक्टिविटी प्रदान करने के साथ ही सुविधाओं में भी आमूल-चूल सुधार करने की आवश्यकता है। इस क्षेत्र से पलायन की समस्या को समाप्त करने में पर्यटन उद्योग रूपान्तरकारी परिवर्तन लाने में सक्षम है। आवश्यकता यह भी है कि इस क्षेत्र की लोक संस्कृति और गुमनाम ऐतिहासिक, धार्मिक और प्राकृतिक स्थलों का व्यापक प्रचार-प्रसार करके वहाँ पर मानक सुविधाओं को स्थापित करते हुए सैलानियों को आकर्षित किया जाए। टूर और ट्रैवल्स कंपनियों को बुन्देलखण्ड क्षेत्र में सैलानियों को लाने के लिए विशेष पैकेज देने की पेशकस करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।.

खोजशब्द; बुन्देलखण्ड क्षेत्र, पर्यटन विकास, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत, प्राकृतिक पर्यटन स्थल, क्षेत्रीय आर्थिक विकास

प्रस्तावना

बुन्देलखण्ड किसी पहचान का मोहताज नहीं है। यह वीरों की धरती है, एतिहासिक धरोहरों की धरती है, प्राकृतिक सौन्दर्य का खजाना है, बहु-मूल्य खनिज संसाधन इसकी गोद में समाये हुए हैं। यही एकमात्र भारत की ऐसी जगह, जहाँ पर पाँच नदियों का एक ही स्थान पर संगम होता है। यहीं पर रामराजा सरकार का भव्य मंदिर विद्यमान है। रानी लक्ष्मीबाई की वीर गाथाएँ यहाँ के लोग आज भी भूले नहीं हैं। अंग्रेजी हुकूमत को धूल चटाने वाली रानी लक्ष्मीबाई के पराक्रम को आज भी प्रेरणादायी शक्ति के रूप में उपयोग किया जाता है। यह आल्हा और ऊदल की भूमि है, जिनकी वीरता के चर्चे जन-मानस में बसे हुए हैं। खजुराहो के मंदिर समूह प्राचीन समृद्ध वास्तुकला के उदाहरण हैं। भगवान श्री राम ने वनवास के दिन बुन्देलखण्ड के चित्रकूट में व्यतीत किये थे। इसी क्षेत्र में स्थित ललितपुर का दशावतार मंदिर, मंदिर वास्तुकला के प्रारंभ का उदहारण है।.

बुन्देलखण्ड के प्रमुख पर्यटन स्थल बुन्देलखण्ड क्षेत्र उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में विस्तारित है, जो पर्यटन स्थलों की दृष्टि से प्रसिद्ध है। यहाँ के कुछ प्रमुख पर्यटन स्थल निम्नलिखित हैं-

खजुराहो मंदिर समूह:

चंदेल शासकों द्वारा 10वीं सदी में निर्मित खजुराहो के मंदिर बुन्देलखण्ड के प्रमुख पर्यटन स्थलों में एक है। यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थलों में सम्मिलित ये मंदिर हिंदू और जैन धर्म से संबंधित हैं। शिव को समर्पित कंदरिया महादेव का मंदिर अत्यंत प्रसिद्ध है। काम कला को प्रदर्शित करती मूर्तियाँ सजीव प्रतीत होती हैं। देश-विदेश के पर्यटक इन मदिरों की सुन्दरता और एतिहासिकता का देखने को आते हैं। यहाँ की मंदिरों के नक्काशी कार्य कला और शिल्पकला के अिद्वतीय उदहारण प्रस्तुत करते हैं। मंदिर के चारों ओर वन्य जीवन और प्रकृति का अप्रतिम सौन्दर्य देखने को मिलता है। खजुराहो का दशहरा मेला अत्यंत प्रसिद्ध है। इस मेले में स्थानीय नृत्य, संगीत और अन्य परंपरागत आयोजनों का संपन्न किया जाता है। खजुराहो के चारों ओर जंगल, झरने, नदियाँ आदि इस शहर को प्राकृतिक रूप से भी समृद्ध बनाती हैं। उपर्युक्त विशेषताएं देश-विशेष के पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं।

कंदरिया महादेव मंदिर, खजुराहो

ओरछा:

ओरछा किला

मध्य प्रदेश में झाँसी से कुछ दूरी पर वेतवा नदी के किनारे स्थित ओरछा एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है। ओरछा नगरी अपनी संस्कृति, ऐतिहासिक महत्त्व और प्राचीन स्थलों के लिए प्रसिद्ध है। ओरछा नगरी को महाराजा वीरसिंह देव द्वारा बसाया गया था। यहाँ पर ऐतिहासिक इमारतें, महल, मंदिर और अनेक महत्त्वपूर्ण स्थल हैं। यहाँ रानी महल, राजा महल, जहाँगीर महल और अनेक सुन्दर एवं विशाल महल और छतरियां हैं, जिनका निर्माण लगभग 16वीं और 17वीं शताब्दी में कराया गया था। यहाँ पर अनेक छत्रीशालायें हैं, जो राज परिवार के स्मारकों और धार्मिक उत्सवों से संबंधित हैं।

ओरछा में ही राम राजा सरकार का भव्य मंदिर है। यहाँ पर भगवान को राजा के रूप में पूजा जाता है। मान्यता के अनुसार महारानी की अगाध भक्ति से प्रभावित भगवान राम अयोध्या से ओरछा आने के लिए इस शर्त पर तैयार हुए, कि उन्हें वहाँ पर राजा के रूप में पूजा जाए। भगवान राम के लिए भव्य और विशाल चतुर्भुज मंदिर का निर्माण करवाया गया था, लेकिन मंदिर अपूर्ण होने के कारण रानी ने भगवान को अपने रसोई में रख दिया। जब मंदिर पूर्ण हुआ तो भगवान राम को चतुर्भुज मन्दिर में स्थापित करने का प्रयास किया गया, लेकिन मूर्ति उस स्थान से टल न सकी। इस कारण से उसी स्थान पर भगवान का भव्य मंदिर बना दिया गया। वर्तमान में इसी स्थान पर भगवान राम की पूजा-अर्चना होती है।

राम राजा मंदिर, ओरछा

सरकार द्वारा यहाँ के भव्य महलों और ऐतिहासिक स्थानों को संरक्षित करने का प्रयास किया जा रहा है। महल के अन्दर शाम को 'लाइट एण्ड साउंड शो' कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया जाता है, जिससे कि यहाँ की लोक संस्कृति और ऐतिहासिकता से पर्यटकों को अवगत कराया जा सके। यहाँ पर अनेक होटल और रिसोर्ट भी बने हुए हैं, जिनमें उच्च स्तरीय सुविधाएँ पर्यटकों को दी जाती है। वेतवा नदी में रिवर राफ्टिंग और नौकायन की सुविधा भी उपलब्ध है।

झाँसी:

सन 1857 की क्रांति में अंग्रेजों के समक्ष अदम्य साहस का परिचय देने वाली रानी लक्ष्मी बाई की कर्म भूमि झाँसी पर्यटन की

दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। यहाँ पर झाँसी का किला, रानी महल दर्शनीय स्थल हैं। झाँसी से लगभग 13 किमी की दूरी पर गढ़मउ झील पहाड़ियों की बीच में बसी हुई अत्यंत मनमोहक लगती है। झाँसी से लगभग 30 किमी की दूरी पर स्थित परीक्षा डैम पर्यटन का एक रोमांच प्रस्तुत करता है।

झाँसी का किला

ललितपुर:

ललितपुर में वेतवा नदी पर स्थित राजघाट बाँध और माताटीला बाँध वर्षा माह में अपनी अप्रतिम छटा को प्रस्तुत करता है। इस समय यहाँ पर्यटकों की अच्छी भीड़ देखने को मिलती है।

राजघाट डैम, ललितपुर

पन्ना टाइगर रिजर्व:

मध्य प्रदेश में स्थित पन्ना टाइगर रिजर्व एक प्रमुख राष्ट्रीय उद्यान है। इस राष्ट्रीय उद्यान को यूनेस्को द्वारा जैव आरक्षित क्षेत्र भी घोषित किया गया है। यह उद्यान अपनी प्राकृतिक सौंदर्य, वन्य जीवन और टाइगर रिजर्व के लिए प्रसिद्ध है। पन्ना टाइगर रिजर्व के बीच से पन्ना नदी प्रवाहित होती है। इस रिजर्व में मुख्यतः बाघ, चीता, लेपर्ड, हाथी, सांभर, बारहसिंगा, गौर, नीलगाय जैसे वन्य जीव निवास करते हैं। टाइगर प्रोजेक्ट कार्यक्रम द्वारा यहाँ पर टाइगर को संरक्षित करने में सफलता प्राप्त हुई है। यहाँ के घने जंगल, पन्ना नदी का किनारा, पर्वतीय क्षेत्र और झीलें आदि इस क्षेत्र को प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर बनाती हैं। रिजर्व में जंगल सफारी, जंगल ट्रैकिंग आदि सुविधाएँ उपलब्ध हैं, जो पर्यटकों को आनंदित और रोमांचित करने का भरपूर मौका देती हैं। प्राकृतिक और खनिज संसाधनों से यह क्षेत्र संपन्न है।

पन्ना टाइगर रिजर्व, पन्ना

चित्रकूट:

मध्य प्रदेश में स्थित चित्रकूट एक धार्मिक, प्राकृतिक और ऐतिहासिक पर्यटक स्थल है. यह अपने पौराणिक महत्त्व, प्राचीन मंदिरों तथा प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए विख्यात है। चित्रकूट को 'प्राचीन भारत का काशी' भी कहा जाता है। यह वही स्थान है, जहाँ पर जन-मानस में बसने वाले भगवान् राम, सीता और लक्ष्मण अपने वनवास के दिन व्यतीत किये थे। यहाँ पर अनेक प्राचीन मंदिर भी हैं, जिनमें प्रमुख हैं- विश्वनाथ मंदिर, हनुमान ध्वज, बाबा नीमकार, गणेश बाबा आदि। यहाँ का प्राकृतिक सौन्दर्य चित्रकूट को आदर्श पर्यटक स्थल बनाते हैं। यहाँ स्थिति चित्रकूट झील, चंद्रधरा गुहा और महाकाल पर्वत आदि आकर्षण के केंद्र हैं। यहीं पर मंदाकिनी नदी, गुप्त गोदावरी और सतीपुल भी है, जो धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। प्रत्येक वर्ष देश-विदेश के अनेक पर्यटक और धार्मिक भावना से प्रेरित लोग चित्रकूट धाम में दर्शन के लिए आते रहते हैं। जब भी चित्रकूट जाएँ, तो वहाँ पर कामतानाथ, भारतकूप, सती अनुसुइया आदि स्थानों पर भी जाना न भूलें।

मन्दाकिनी नदी, चित्रकूट

दतिया:

झाँसी से लगभग 30 किमी. की दूरी पर स्थित दतिया एक महत्तवपूर्ण पर्यटक स्थल है। यहाँ पर स्थित माता पीताम्बरा शक्ति पीठ हिन्दू धर्म के अनुयायियों के लिए महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। माता के दर्शन के लिए लाखों भक्त सुदूर क्षेत्रों से यहाँ पर वर्ष भर आते रहते हैं। सिद्ध बाबा की मजार मुस्लिम दतिया को यहाँ के ऐतिहासिक धर्म के लोगों के लिए महत्वपूर्ण हैं। किले और पुरातात्विक स्मारक भी महत्त्वपूर्ण पर्यटन स्थल बनाते हैं।

श्री पीताम्बरा पीठ, दतिया

दतिया जिले में ही स्थिति सोनागिरी जैन धर्म का एक महत्त्वपूर्ण धार्मिक स्थल है। पहाड़ियों के बीच में बसा यह क्षेत्र अनुपम प्राकृतिक सौन्दर्य से सोनागिरी को समृद्ध बनाता है। यहाँ पर जैन धर्म से संबंधित अनेक मंदिर स्थित हैं। जैन धर्म के अनुयायी वर्ष भर यहाँ आते रहते हैं।

उपर्युक्त क्षेत्रों के अतिरिक्त बुन्देलखण्ड में पर्यटन की दृष्टि से अन्य क्षेत्र भी हैं, जो पर्यटन की असीम संभावनाओं से भरे हुए हैं, जैसे-ग्वालियर, बाँदा आदि।

बुन्देलखण्ड में पर्यटन की दृष्टि से उपयुक्त समय : वैसे तो आप किसी भी समय यहाँ के पर्यटन स्थलों पर आ सकते हैं, लेकिन गर्मी अधिक होने के कारण थोडा असुविधा हो सकती है। इसलिए अक्टूबर से मार्च माह के बीच का समय सबसे उपयुक्त होगा। यदि आपको प्राकृतिक सौन्दर्य से अधिक लगाव है, तो आप वर्षा माह में आकर यहाँ के झरने और पहाड़ियों की सुन्दरता को देख सकते हैं, जो कि एक अच्छा अनुभव आपको प्रदान करेगा।

बुन्देलखण्ड में पर्यटन के सामाजिक-आर्थिक पहलू : बुन्देलखण्ड क्षेत्र अपनी ऐतिहासिकता, प्राकृतिक सौन्दर्य, लोक संगीत, लोक नृत्य और विविध परम्पराओं के लिए प्रसिद्ध है। पर्यटन को प्रोत्साहित करके इस क्षेत्र की संस्कृति से देश-विदेश के पर्यटकों को परिचित कराया जा सकता है। स्थानीय शिल्प और कृषि उत्पादों से पर्यटकों को परिचित कराना व इसके माध्यम से प्रचार-प्रसार करके रोजगार का एक बेहतर ढाँचा तैयार करने में पर्यटन क्षेत्र की महत्त्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। बुन्देलखण्ड के स्मारकों, किलों और प्राकृतिक पर्यटन स्थलों का विकास करके पर्यटकों को आकर्षित करना व मानक सुविधाओं को सुनिश्चित करके बुन्देलखण्ड क्षेत्र का कायाकल्प संभव हो पायेगा। यदि इस क्षेत्र में पर्यटन उद्योग बढ़ता है, तो यहाँ के सामाजिक-आर्थिक पिछड़ेपन को दूर करने में सहायता मिल सकती है। पर्यटन के माध्यम से स्थानीय लोगों को रोजगार मिलेगा। स्थानीय संस्कृति का वैश्वीकरण होगा। रोजगार के माध्यम से आय में वृद्धि होगी, जिसका परिणाम सामाजिक-आर्थिक समानता के रूप में फलित होगा।

बुन्देलखण्ड में पलायन की समस्या को दूर करने में पर्यटन उद्योग महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए तैयार है. महानगरों में जाकर सामाजिक और नैतिक विघटन से बचाने के लिए इस क्षेत्र में पर्यटन उद्योग को बढ़ावा देकर सामाजिक व्यवस्था को सुचारू रूप से संचालित करने में सहायता प्राप्त होगी.

बुन्देलखण्ड में पर्यटन : समस्याएं और समाधान : बुन्देलखण्ड क्षेत्र में पर्यटन विकास में कुछ समस्याएं हैं, जिनका समाधान करके इस क्षेत्र में पर्यटन की असीम संभावनाओं को तलाशा जा सकता है, जिनका वर्णन यहाँ किया जाना समीचीन होगा-

- बुन्देलखण्ड क्षेत्र में कुछ पर्यटक स्थलों पर आवश्यक सुविधाओं की कमी है, जैसे- बेहतर होटल, रेस्टोरेंट, पर्यटक केंद्र आदि। समाधान के रूप में विश्वस्तरीय गुणवत्तापूर्ण सुविधाएँ प्रदान करके तथा स्थानीय समुदाय का सहयोग व साझेदारी तथा निजी क्षेत्र को प्रोत्साहित करके इन समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।
- कुछ पर्यटन स्थलों पर भीड़-भाड़ अधिक होने के कारण अव्यवस्था का सामना करना पड़ता है। उचित पर्यटक प्रबंधन रणनीति अपनाकर और स्थानीय लोगों की सहभागिता सुनिश्चित करके इस समस्याओं से निपटा जा सकता है।
- संरक्षण के अभाव और पर्यटकों के गलत आदतों के कारण यह देखा गया है कि ऐतिहासिक और प्राकृतिक पर्यटन स्थलों का क्षरण हो रहा है। इस समस्या का समाधान सरकारी और निजी क्षेत्रों तथा पर्यटक के सहयोग से किया जा सकता है। संरक्षण की अधिक सख्ती और पर्यटकों को प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करने के लिए शिक्षित किया जाना चाहिए।

- पर्यटन से लाभ उठाने वाले स्थानीय समुदायों को अक्सर इसके सामाजिक और आर्थिक लाभ में हिस्सेदारी की कमी महसूस होती है। समाधान के रूप में, स्थानीय समुदायों को प्रशिक्षण और रोजगार के अवसरों की पहुँच मिलनी चाहिए, साथ ही स्थानीय उत्पादों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
- बुन्देलखण्ड के अनेक ऐसे क्षेत्र हैं, जो अभी-भी पर्यटन में असीम संभावनाओं के बावजूद नेपथ्य में हैं। इन पर्यटन स्थलों के संबंध में लोगों को जानकारी ही नहीं है, यदि जानकारी है भी, तो पर्यटक वहाँ पर जाना ही नहीं चाहते हैं, क्योंकि वहाँ पर मूलभूत सुविधाएँ भी पर्यटकों को उपलब्ध नहीं है और न ही आवागमन की बेहतर सुविधाएँ हैं। इस कारण से पर्यटकों की आगमन संख्या पर प्रभाव पड़ता है। इस समस्या का समाधान पर्यटन संचार के विकास और स्थानीय संगठनों के साथ साझेदारी करके किया जा सकता है।

बुन्देलखण्ड अपने में पर्यटन की असीम संभावनों को लिए हुए हैं। सामाजिक-आर्थिक पिछड़ेपन और सूखे की मार को झेलते हुए यह क्षेत्र नित नई संभावनाओं को तलाश रहा है। इसी क्रम में उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश सरकार द्वारा बुन्देलखण्ड के विकास के लिए अनेक प्रयास किये जा रहे हैं। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा बुन्देलखण्ड एक्सप्रेस वे का निर्माण, झाँसी में बीड़ा (बुन्देलखण्ड औद्योगिक विकास प्राधिकरण) का गठन, बुन्देलखण्ड गौरव महोत्सव आदि कार्यक्रम इस क्षेत्र के कायाकल्प के लिए संचालित लिए जा रहे हैं। प्रधानमंत्री के इच्छानुरूप उ०प्र० सरकार द्वारा पर्यटन के लिए बृहद स्तर पर प्रयास किये जा रहे हैं। पर्यटन को समृद्ध बनाकर बुन्देलखण्ड का कायाकल्प करते हुए, इस क्षेत्र से होने वाले पलायन का भी समुचित समाधान खोजा जा सकता है।

सन्दर्भ

[1] Tourist Places | District Jhansi, Government of Uttar Pradesh | India
[2] Tourist Places | District Chitrakoot, An Official Website of District Chitrakoot | India
[3] बुन्देलखण्ड क्षेत्र के प्रमुख पर्यटन स्थल (Bundelkhand region's major tourist destinations) | Bundelkhand Research Portal
[4] Orchha | District Administration Niwari, Government of Madhya Pradesh | India
[5] बुंदेलखंड - भारतकोश, ज्ञान का हिन्दी महासागर (bharatdiscovery.org)
[6] Bundelkhand Gaurav Mahotsav will be held in 7 districts | 7 जिलों में होगा बुन्देलखण्ड गौरव महोत्सवः पर्यटन गतिविधियां बढ़ा बुंदलेखंड की आर्थिक स्थिति को किया जाएगा मजबूत Lucknow News | Dainik Bhaskar
[7] ओरछा किला - विकिपीडिया (wikipedia.org)